

अनैतिक युक्ति से रुढ़िवादी प्रथा निभाई

“उसके सीने पर मेरे उरोजों की चुभन और उसके होंठों पर मेरे चुम्बनों की मिटास ने उसकी वासना को बहुत भड़का दिया था जिस कारण वह अपना संयम खो बैठा। ...”

Story By: (tpl)

Posted: मंगलवार, जनवरी 24th, 2017

Categories: भाई बहन

Online version: [अनैतिक युक्ति से रुढ़िवादी प्रथा निभाई](#)

अनैतिक युक्ति से रुढ़िवादी प्रथा निभाई

लेखिका : वानिका श्रीनिवासन

सम्पादिका एवम् प्रेषिका : तृष्णा लूथरा (टी पी एल)

अन्तर्वासना की पाठिकाओं एव पाठकों, आप सब को तृष्णा लूथरा (टी पी एल) का प्रणाम । मेरी रचनाओं को पढ़ने और उन पर अपने विचार लिख कर भेजने के लिए आप लोगों का बहुत धन्यवाद ।

मेरी रचना

अठरह वर्ष पूर्व दिए गए वचन का मान रखा

के प्रकाशित होने के बाद उस रचना की नायिका नलिनी रविन्द्रन ने एक बार फिर मुझसे संपर्क किया ।

इस बार उसने अपनी बचपन की सखी वानिका के जीवन में घटित एक घटना एवम् उसके अनुभव लिख कर भेजे तथा मुझे उस रचना का अनुवाद करके अन्तर्वासना पर प्रकाशित करने का अनुरोध किया ।

उसके द्वारा भेजी रचना को जब मैंने पढ़ा तो मेरा मन भावुक हो उठा और वानिका के प्रति सहानभूति भी उभर आई तथा मैंने उस रचना का अनुवाद करके प्रकाशित करने का निश्चय किया ।

मैंने वानिका से संपर्क किया और उसके साथ घटी घटना के बारे में विस्तार से चर्चा करी और उसके अनुभव को एक रचना के रूप में लिख कर प्रकाशित करने की अनुमति मांगी ।

वानिका की सहमति मिलने के बाद मैंने अपनी कलम उठाई और पांच सप्ताह के परिश्रम के बाद ही मैं उसके जीवन की उस घटना एवम् अनुभव का विवरण उसी के मुख से निकले



शब्दों में अनुवाद करके आप के समक्ष प्रस्तुत कर रही हूँ।

अन्तर्वासना के प्रिय पाठिकाओं एवम् पाठको, कृपया मेरा अभिवादन स्वीकार करें।

मेरा पूरा नाम है वानिका सुन्दरम श्रीनिवासन है लेकिन सब मुझे सिर्फ वानिका के नाम से ही पुकारते हैं।

मैं एक दक्षिण भारतीय ब्राह्मण परिवार की बहुत उजले वर्ण की अति सुन्दर नैन नक्श वाली युवती हूँ और तमिलनाडु के थंजावुर शहर में रहती हूँ।

मेरे शहर को मंदिरों का शहर भी कहते हैं। क्योंकि इसमें कुछ प्रसिद्ध मंदिर भी हैं जिस के कारण यहाँ के निवासी बहुत ही धार्मिक एवम् रुढ़िवादी भी हैं।

हमारा परिवार भी प्रदेश के असंख्य रुढ़िवादी परिवारों में से एक है जो कई सदियों से चली आ रही रुढ़िवादी प्रथाओं को तोड़ने के लिए बिल्कुल ही तैयार नहीं है।

उन बहुत सारी रुढ़िवादी प्रथाओं में से एक प्रथा यह है की हमारे परिवार की सभी लड़कियों को अपनी माँ के भाई यानि अपने मामा से शादी करनी पड़ती है।

मेरी निम्नलिखित रचना में इसी रुढ़िवादी प्रथा के कारण हमारे परिवार में उत्पन्न हुई एक विकट स्थिति का ही विवरण है जो लगभग तीन वर्ष पहले घटित हुई थी।

उस समय मैं लगभग अड़तीस वर्ष की होने वाली थी और हर वर्ष की तरह गर्मियों को छुट्टियों में अपनी सत्रह वर्ष की एकलौती बेटी 'वैजन्ती' के साथ अपने मायके घर में रहने गई हुई थी।

मेरी सास के कड़वे बोल, पति के आदेश एवम् सगे-सम्बन्धियों के दबाव और घर में हो रहे रोज़ के कलह से छुटकारा पाने के लिए मुझे हमारी इस रुढ़िवादी प्रथा के आगे नतमस्तक



होना पड़ा।

उस प्रवास के दौरान मैंने उस प्रथा के विरुद्ध अपना विरोध त्याग कर अपने मम्मी पापा से वैजन्ती की शादी के लिए अपने एकलौते भाई सेंथिल का रिश्ता मांगा।

मेरी बात सुन कर मम्मी-पापा ने मुझे समझाया- वानिका, अभी वैजन्ती सिर्फ सत्रह वर्ष की है इसलिए तुम्हें अभी उसकी शादी एवम् रिश्ते के बारे में इतनी जल्दी कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए।

तब मैंने उनसे कहा- मम्मी, जब मैं सत्रह वर्ष की थी तब आपने मेरा रिश्ता हमारी प्रथा के अनुसार अपने भाई के साथ क्यों कर दिया था ?

मेरे तर्क को सुन कर पापा बोले- वानिका, तब की बात अलग थी और उस समय हम पर पुरानी पीढ़ी का दबाव भी होता था। आज के आधुनिक वातावरण में लड़कों पर वह प्रभाव भी कम हो गया है इसलिए इस बारे में सेंथिल से बात किये बिना हम कोई निर्णय नहीं ले सकते हैं।

पापा की बात समाप्त होते ही मम्मी बोल पड़ी- वानिका, इस प्रथा के बारे में हम तुम्हारी भावनाओं को बहुत अच्छी तरह से जानते हैं। तुम्हें तो याद होगा कि तुम्हारी शादी के समय तुमने इस प्रथा के विरुद्ध कितना बवाल उठाया था।

मैंने तुरंत उत्तर दिया- मैंने बवाल अवश्य उठाया था लेकिन किसी ने मेरा साथ नहीं दिया था। तब आप दोनों ने भी मेरी एक बात भी नहीं मानी थी। अंत में मुझे ही हार के हालात से समझौता करना पड़ा था।

तब पापा बोले- हमें कम से कम सेंथिल से बात तो कर लेने दो, उसके विचार एवम् मंशा तो जान लेने दो।



मैंने उत्तर में कहा- मैं आप को एक सप्ताह का समय देती हूँ, इस अवधि में अगर आपने कोई निर्णय नहीं लिया तो मैं खुद ही सेंथिल से बात करूँगी। अगर आप दोनों ने कोई बाधा डालने की कोशिश करी तो मैं नानी माँ को बुला लूँगी।

मेरी बात सुन कर मम्मी-पापा के चेहरे पर चिंता की रेखाएं उभर आईं क्योंकि नानी माँ मम्मी की तो माँ थी लेकिन वह पापा की बहन तथा सास दोनों ही थी और उनका आदेश कोई भी नहीं टाल सकता था।

उसके बाद एक सप्ताह तक घर में इस विषय पर मेरी किसी के साथ कोई चर्चा नहीं हुई लेकिन सप्ताह के अंत में जब मम्मी-पापा से पूछने पर मुझे कोई संतोषपूर्ण उत्तर नहीं मिला तब मैंने सेंथिल से खुद बात करने का निर्णय लिया।

उस रात जब मेरे पति का फ़ोन आया तब मैंने उन्हें इस विषय में यहाँ की स्थिति और मेरे द्वारा सेंथिल से खुद बात करने के निर्णय से अवगत किया।

मेरी बात सुन कर उन्होंने कहा- वानिका, मम्मी जी (यानि की मेरी सास) कह रही थी कि उन्हें हर हालत में वैजन्ती के लिए सेंथिल का रिश्ता चाहिए। इसलिए इस रिश्ते को पक्का करने के लिए तुम्हें जो भी करना पड़े वह करो।

पति की बात सुन कर मैंने कहा- मैं पूरी कोशिश कर रही हूँ लेकिन क्या होता है वह तो वैजन्ती के भाग्य पर ही निर्भर है।

दूसरे दिन मैं सेंथिल से अकेले में बात करने का अवसर ढूँढने लगी और रात को जब वह खाना खा कर छत पर टहलने के लिए गया तब मैं भी उसके पीछे पीछे ऊपर चली गई।

जब मैंने उसे छत की मुंडेर पर बैठे देखा तब मैं भी उसके साथ जा कर बैठ गई तथा बात शुरू करने के लिए पुछा- सेंथिल, इस बार मैं देख रही हूँ कि तुम कुछ चुपचाप और खोये



खोये से रहते हो तथा अधिकतर अकेले बैठे रहते हो। इस बार तुमने न तो मुझसे और न ही वैजन्ती से खुल कर कोई बात करी है।

वह बोला- नहीं दीदी ऐसी तो कोई बात नहीं है।

मैंने पूछा- क्या इस बार छुट्टियों में हमारा यहाँ आना तुम्हें अच्छा नहीं लग रहा ? अगर ऐसी बात है तो हम कल ही यहाँ से चले जाते हैं।

मेरी बात सुनते ही वह असमंजस में मुझे देखते हुए बोला- दीदी, आप कैसी बात कर रही हैं ? आप तो मेरी बड़ी प्यारी बहन हो, मुझे आपका यहाँ आना क्यों बुरा लगेगा ? दर- असल आजकल ऑफिस में काम का बोझ कुछ अधिक है इसलिए थकावट हो जाती है।

मैंने उसकी बात को नकारते हुए कहा- मुझे नहीं लगता कि तुम सही कह रहे हो। तुम इस घर में अपने को बहुत अकेला महसूस करते हो। कल मम्मी भी यही कह रही थी तुम आजकल बहुत गुमसुम रहते हो ?

अपनी बात को जारी रखते हुए मैंने कहा- मुझे लगता है कि शाम को घर आने के पश्चात तुम्हारा मन बहलाने के लिए तुम्हें एक ऐसे साथी की आवश्यकता है जिसे देखते ही तुम्हारी थकावट रफू-चक्कर हो जाये। तुम्हारे शरीर में सफुर्ती आ जाये और चेहरे पर ताजगी झलकने लगे।

मेरी बात को सुन कर उसने मुस्कराते हुए कहा- दीदी, आप पहेलियाँ क्यों बुझा रही हैं ?

सीधा ही क्यों नहीं कह देती ती मुझे अब शादी कर लेनी चाहिए।

मैंने भी मुस्कराते हुए कहा- सेंथिल तुम तो बहुत समझदार हो गए हो। तुमने तो मेरे मन की बात को पढ़ भी लिया है और मेरे मुँह में आई बात को बोल भी दिया है।

सेंथिल ने उत्तर दिया- दीदी, इसमें समझदारी की बात क्या है ? आजकल घर में हर समय मेरी शादी के विषय पर ही तो बहस चलती रहती है। घर के हर कोने से उसी बात की



प्रतिध्वनि ही गूँजती रहती है।

मैंने उसकी बात के उत्तर में कहा- अगर घर में यह बात होती है तो इसमें खिन्न होने की क्या बात है। तुम सताईस वर्ष के होने वाले हो और शादी के लिए यह सबसे उपयुक्त आयु है। अब शादी नहीं करोगे तो कब करोगे ? जब तुम्हारे मुँह में से दांत झड़ने लगेंगे और तुम फिर से तुतला कर बोलने लगोगे ?

मेरी बात सुन कर उसके मुँह पर मुस्कराहट आ गई और बोला- दीदी, आप भी क्या बात करती हैं। मैंने कब कहा कि मैं बुढ़ापे में शादी करूँगा। कोई अच्छा रिश्ता आएगा तो मम्मी-पापा के आदेश पर अवश्य ही शादी कर लूँगा।

उसके मुख से यह बात सुन कर मैंने तुरंत कहा- क्या वैजन्ती तुम्हें अच्छी नहीं लगती ? क्या मम्मी-पापा ने तुमसे उसके साथ रिश्ते के बारे में बात नहीं करी ?

उसने मेरी बात का उत्तर देते हुए कहा- दीदी, उन्होंने बात करी थी लेकिन मैं इस प्रकार की रुढ़िवादी प्रथा से सहमत नहीं हूँ इसलिए मैंने उन्हें अपने विचार स्पष्ट कर दिए थे।

मैंने उसको समझाते हुए कहा- सेंथिल, हमारे परिवार में हमारी नानी, दादी, माँ, मैंने तथा अन्य महिला सदस्यों ने भी इसी प्रथा के अनुसार ही अपने अपने मामा से शादी करी है। अगर तुम्हें यह प्रथा पसंद नहीं है तो तुमने मेरी शादी के समय मेरे साथ मिल कर विरोध क्यों नहीं जताया था ? तुमने तो अपने मामा जी के साथ मेरी शादी में बहुत ही बड़-चढ़ कर हिस्सा लिया था।

मेरी बात सुन कर वह मुंडेर से उठ खड़ा हुआ और सीढ़ियों की ओर बढ़ते हुए कहा- दीदी, उस समय मैं आयु में छोटा था और मुझे इन बातों का पूर्ण बोध नहीं था इसलिए मैं बड़ों के सामने कुछ बोल नहीं सका था।



अपनी बात समाप्त करके वह तेज़ी से सीढ़ियाँ उतर कर अपने कमरे में चला गया और मैं अपना मन मसोस कर उसके पीछे पीछे सीढ़ियाँ उतर कर अपने कमरे में चली गई।

थोड़ी देर के बाद जब मेरे पति का फ़ोन आया तब मैंने उन्हें सेंथिल के विचारों से भी अवगत करा तो वह मुझ पर भड़क कर बोले- मुझे सेंथिल के विचारों के बारे में कोई रुचि नहीं है, मुझे हमारी प्रथा के अनुसार हमारी बेटी के लिए उसके मामा का हाथ चाहिए। मेरी ओर से तुम्हें खुली छूट है जिसके लिए तुम तन, मन और धन से इस रिश्ते को पक्का करके ही घर आना।

मैंने पलट कर कहा- आप मुझ पर गुस्सा क्यों हो रहे हैं ?

तब पति ने कहा- वानिका, मैं गुस्सा नहीं हो रहा हूँ। यह रिश्ता हमारी धार्मिक रीति रिवाजों की एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रथा का हिस्सा है जिसे हमें हर हाल में नैतिक या अनैतिक युक्ति से पूरा करना ही है।

पति की बात सुन कर मैंने भी गुस्से में कहा- ठीक है, मैं किसी भी नैतिक या अनैतिक युक्ति से यह रिश्ता पक्का करवाने के लिए अपना सर्वस्व लुटा दूंगी। लेकिन इसके लिए आप मुझे एक वचन दीजिये की रिश्ता हो जाने के बाद आप मुझसे यह नहीं पूछेंगे कि यह कैसे सम्भव हुआ और ना ही कभी इस विषय पर कोई चर्चा करेंगे ?

मेरी बात सुनते ही उन्होंने नर्म पड़ते हुए कहा- मेरी जानू, मैं गुस्सा नहीं हो रहा हूँ और प्लीज तुम भी गुस्सा थूक कर शांत हो जाओ। मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि मैं तुमसे कभी भी नहीं पूछूँगा कि तुमने इस विषय में सफलता कैसे पाई थी लेकिन मैं तुमसे इतनी तो आशा रखता हूँ कि तुम कार्य में सफलता की सूचना अवश्य ही बताओगी ?

मैंने पति को कार्य में सफलता के बारे में बताने का आश्वासन दे कर फ़ोन बंद किया और आगे की कार्य-विधि के बारे में सोचते सोचते सो गई।



अगले दिन भर मेरे पति द्वारा नैतिक या अनैतिक युक्ति से यह रिश्ता पक्का करने की बात मेरे मन को बार बार कचोट रही थी।

क्योंकि अभी तक नैतिक युक्ति से कोई सफलता नहीं मिली थी इसलिए पति के कथन और मेरे मस्तिष्क ने भी मुझे अनैतिक युक्ति के बारे में सोचने के लिए विवश कर दिया।

दिन भर इस विषय पर सोच विचार करने के बाद मैंने निश्चय किया कि मुझे सेंथिल के साथ कुछ ऐसा करना चाहिए जिस से वह मेरी कही किसी भी बात की अवेलहना नहीं कर सके।

मैंने अगले दिन से ही मम्मी पापा से इस बारे में बात करनी बंद कर दी और अपना सारा ध्यान सेंथिल पर केन्द्रित करते हुए उसे वश में करने की योजना बनाने लगी।

मेरी उस योजना को कार्यान्वित करने के लिए भाग्य ने भी मेरा साथ दिया और दो दिनों के बाद मम्मी ने बताया की पापा ने दो दिनों के लिए सब को बालाजी ले जाने के प्रयोजन किया था।

कार्यक्रम के अनुसार सब शनिवार की सुबह को जाएंगे और रविवार की शाम तक ही वापिस आयेंगे लेकिन सेंथिल को ऑफिस से छुट्टी नहीं मिलने के कारण उसने जाने से मना कर दिया।

तब अपनी योजना के कार्यान्वित करने के लिए मैंने भी सेंथिल की देखभाल के लिए रुकने का बहाना बना कर उनके साथ जाने से मना कर दिया।

शनिवार सुबह मम्मी-पापा वैजन्ती को ले कर बालाजी चले गए और सेंथिल भी अपने ऑफिस चला गया।

सब के जाने के बाद मैं कुछ देर अकेले में बैठ कर सेंथिल के साथ उन दो दिनों और एक रात में अपनी योजना को सफल बनाने के बारे विचार करती रही।



क्योंकि शनिवार को सेंथिल का ऑफिस आधा दिन होता है इसलिए मैं जल्दी से उस युक्ति को कार्यान्वित करने के लिये काम पर लग गई।

दोपहर को सेंथिल के आने के बाद हमने एक साथ खाना खाया और रसोई समेटने लगी और वह बैठक में गलीचे पर लेट कर टीवी देखने लगा।

मैं रसोई का काम समाप्त करके उसी का पास जा कर लेट गई और उससे पूछा- आज तो ऑफिस में सिर्फ आधा दिन ही काम किया है तो क्या इतने में भी थकावट हो गई है? उसने कहा- नहीं ऐसी बात तो नहीं है। आप ऐसा क्यों पूछ रही है, आज तो मैं अपने को ताज़ा और चुस्त महसूस कर रहा हूँ।

मैं बोली- तुम सोफे पर बैठ कर टीवी देखने के बजाय लेट कर टीवी देख रहे हो तो मुझे लगा कि तुम आज भी थके हुए हो।

फिर मैं उसकी ओर करवट ले कर बिल्कुल उसके साथ सट गई और अपनी एक बाजू उसके सीने पर तथा एक टांग उसकी जाँघों पर रख कर उससे चिपट कर लेट गई।

क्योंकि मैंने सेंथिल के शरीर को अपनी बाजू और टांग से कस कर जकड़ लिया था इसलिए शायद उसे कुछ असुविधा होने लगी थी।

उसने मेरी बाजू और टांग को अपने ऊपर से हटाते हुए कहा- दीदी, मुझे ऐसे जकड़ कर क्यों लेटी है? ऐसे मेरा दम घुटता है इसलिए प्लीज थोड़ा अलग हो कर लेटिये।

मैंने दोबारा अपनी बाजू और टांग उसके ऊपर रखते हुए कहा- बचपन में जब तुम मेरे साथ ऐसे ही चिपक कर लेटते थे और मैं तुम्हें अलग होने के लिए कहती थी, तब क्या तुम मेरा कहना मानते थे?

उसके बाद मैंने उसके साथ और भी अधिक कस कर चिपक गई जिससे मेरे स्तन एवम्



चूचुक उसके सीने में धंसने लगी और मेरा घुटना उसके लिंग को दबाने लगा था ।

मेरा उसके साथ चिपकने के कारण सेंथिल के शरीर में उत्तपन हो रही कामुकता से अपने को असुविधाजनक स्थिति में महसूस करने लगा था इसलिए वह लगातार अपने शरीर को हिला कर मुझसे अलग होने का प्रयत्न करने लगा था ।

इससे पहले के वह अपने को मुझसे छुड़ा पाता मैं उचक कर उसके ऊपर चढ़ गई और उसकी जाँघों के ऊपर बैठ कर उससे पूछा- सेंथिल, तुम कह रहे थे कि तुम रुढ़िवादी प्रथाओं से सहमत नहीं हो, लेकिन अगर दादी-दादा या नानी-नाना या मम्मी-पापा तुम्हें वैजन्ती से शादी करने का आदेश दें तो तुम क्या करोगे ?

उत्तर में सेंथिल ने कहा- दीदी, मैं इस प्रकार की रुढ़िवादी प्रथा से सहमत नहीं हूँ । लेकिन परिवार की प्रतिष्ठा और बड़ों के मान के लिए मुझे जो भी आदेश मिलेगा मैं उसे पूर्ण करूँगा ।

उसका उत्तर सुन कर मैंने कहा- मैं भी तो तुम से बड़ी हूँ । क्या तुम्हें मेरे द्वारा दिए गए किसी भी आदेश का पालन करोगे ?

सेंथिल ने कहा- दीदी, आप की हर बात मानने का वचन तो नहीं दे सकता लेकिन इस सन्दर्भ में आपके मान के लिए मैं आपके आदेश की अवज्ञा करने की चेष्टा कभी नहीं करूँगा का आश्वासन ही दे सकता हूँ ।

उसकी बात सुनते ही मैं उसके ऊपर लेट गई और उसे अपनी बाहों में ले लिया तथा उसके गालों को चूमते हुए कहा- बहुत धन्यवाद मेरे भाई, मुझे तुमसे ऐसा ही कथन सुनने की आशा थी ।

मेरे चुम्बनों के उत्तर में सेंथिल भी मेरे गालों के चुम्बन लेने लगा और यह आदान प्रदान कुछ क्षण चलता रहा ।



फिर जब वह मेरे एक गाल का चुम्बन ले कर दूसरे गाल की ओर बढ़ा तब मैंने अचानक ही अपना मुंह को थोड़ा सा घुमा दिया जिससे मेरे होंठ उनके होंठों से जा मिले। उसने हड़बड़ा कर अपने होंठों को मेरे होंठों से अलग किया और 'सॉरी, दीदी सॉरी' कहा।

उसकी हड़बड़ाहट देख कर मैं बहुत जोर से हंसने लगी और बोली- सेंथिल, क्या हो गया जो इतना घबरा रहे हो? क्या मैंने तुम्हें कुछ कहा है या फिर काट खाया है जो तुम मुझसे दूर भाग रहे हो?

वह संकोच के कारण लड़खड़ाते स्वर में बोला- दीदी, जो हुआ वह नहीं होना चाहिए था। मैं उसके लिए बहुत शर्मिंदा हूँ।

मैंने एक बार फिर उसे आगोश में ले कर अपने साथ चिपका लिया और उसके माथे तथा गालों पर चुम्बनों की बौछार करने के बाद अपने होंठ उसके होंठों पर रख कर उन्हें चूसने लगी।

उसने अलग होने की बहुत कोशिश करी लेकिन वह अपने को मेरी जकड़ से छुड़ा नहीं सका तब मैंने खुद ही उससे अलग हो कर लेटते हुए कहा- अब तो ठीक है, मैंने हिसाब बराबर कर दिया है। मैंने भी वही कर दिया जो तुमसे अनजाने में हो गया था।

उसके सीने पर मेरे उरोजों की चुभन और उसके होंठों पर मेरे चुम्बनों की मिठास ने उसकी वासना को बहुत भड़का दिया था जिस कारण वह अपना संयम खो बैठा। वह झट से मेरे ऊपर लेटते हुए मुझ से चिपक गया और मेरे गालों को चूमने के बाद मेरे होंठों पर अपने होंठ रख दिए और उन्हें चूसने लगा।

उसकी इस हरकत का मैंने कोई विरोध नहीं किया और अपने होंठों को खोल कर उसकी जीभ को मुंह के अंदर जाने के लिए रास्ता बना दिया तथा उसे चूस कर मैंने उसका स्वागत किया।



कुछ देर के बाद मैंने अपनी जीभ को सेंथिल के मुंह में डाल दी जिसे वह काफी देर तक चूसता रहा और हम दोनों एक दूसरे के मुंह के अंदर एकत्रित हो रही लार का आदान प्रदान करते रहे।

हमारी इस क्रिया से उसकी उत्तेजना में वृद्धि हो गई और उसका लिंग जो पहले अर्ध चेतना की अवस्था में था अब पूर्ण चेतना की अवस्था में तन कर मेरी जाँघों के बीच में अपने लिए जगह ढूँढ रहा था।

कुछ क्षणों के बाद जब उसने अपने होंठ मेरे होंठों से अलग करने का प्रयास किया तब मैंने उसकी जीभ को अपने दांतों में दबा कर उसे फिर अपने ऊपर खींच कर लिटा लिया। एक झटके के साथ उसका पूरा बोज़ मेरे उपर पड़ा जिससे मेरे स्तनों की चूचुक उसके सीने में गड़ गई और उसका ताना हुआ लिंग मेरी जाँघों के बीच में धंस गया।

तभी मैंने महसूस किया कि हम दोनों के बीच में फंसी मेरी चूचुक काफी बड़ी और सख्त हो गई थी जो इस बात का संकेत था कि मेरी उत्तेजना में भी वृद्धि हो गई थी।

मेरी दोनों जाँघों के बीच में फंसे हुए सेंथिल के लिंग की गर्मी से उत्तेजित होकर मैंने उसके होंठों को चूसते हुए उसके हाथों को पकड़ कर अपने स्तनों पर रख दिए।

मेरी ओर से मिले संकेत को सेंथिल समझ गया और वह तुरंत मेरे स्तनों को मेरी नाइटी और ब्रा के ऊपर से ही मसलने लगा।

तब मैंने भी उत्तेजनावश अपनी नाइटी को नाभि तक ऊँचा कर के टांगों को थोड़ा फैला दिया जिससे उसके लिंग को अपनी पैटी के अंदर कैद योनि के निकट ही उपयुक्त स्थान प्रदान हो गया।

सेंथिल के लिंग को मेरी योनि की गर्मी मिलते ही वह बहुत उत्तेजित हो गया और उसने



अपने फनफनाते लिंग को मेरी जाँघों के बीच में ऊपर नीचे कर के हिलाने लगा ।
मैंने भी उसका साथ देते हुए उसके नितम्बों को अपने हाथों से मसलने लगी जिससे वह
वासना से पागल हो उठा ।
उसने नाभि पर पड़ी मेरी नाइटी की मेरे उरोजों से ऊपर सरका दिया और ब्रा के ऊपर से ही
मेरे स्तनों को अपने दोनों हाथों से मसलने लगा ।

तभी वासना की एक लहर ने मुझे अपने आगोश में ले लिये और मैंने सब कुछ भूल कर
अपना एक हाथ नीचे लेजा कर सेंथिल के तने हुए लिंग को उसके लोअर के ऊपर से ही
मसलने लगी ।
सेंथिल के लिंग पर मेरे हाथ का स्पर्श लगते ही वह पहले तो सिहर उठा लेकिन शीघ्र ही
उसने थोड़ा ऊँचा हो कर अपने लोअर तो नीचे सरका दिया तथा अपने लिंग को बाहर
निकाल कर मेरे हाथ में पकड़ा दिया ।

उसके सात इंच लम्बे एवम् ढाई इंच मोटे लिंग को अपने हाथ में पा कर मैं अचंभित हो गई
क्योंकि सेंथिल का लिंग इतना लम्बा और मोटा होगा इसकी मैंने कभी अपेक्षा ही नहीं
करी थी ।

बचपन में जब कभी कभी मम्मी के कहने पर मैं सेंथिल को अपने साथ नहलाती और उसे
स्कूल के लिए तैयार करती थी तब शरीर पोंछते समय उसके लिंग को भी पोंछती थी ।
तब उसका लिंग बहुत ही छोटा था और तन जाने के बाद भी वह लगभग दो इंच लम्बा
और पौना इंच मोटा होता था ।

उसके लिंग का वर्तमान रूप देख कर मेरे मन में प्रश्न उठ रहा था कि क्या सेंथिल का वह
छोटा सा लिंग अब इतना बड़ा हो गया था ?
जब मैं सेंथिल के लिंग के बारे में सोच रही थी तभी उसने मेरी ब्रा को भी उपर सरका कर
मेरे स्तनों को बाहर निकाल लिया और उन्हें मसलने, चूमने एवम् चूसने लगा था ।



उसका ऐसा करने से मेरी उत्तेजना में अकस्मात ही वृद्धि होने लगी थी और मैं अपने और सेंथिल के बीच के सभी सम्बन्ध को भूल कर वासना की गहराई में गोते खाने लगी।

तब मैंने सेंथिल से अलग हो कर पहले उसकी बनियान एवम् लोअर को उतार कर नग्न किया और फिर अपनी नाइटी, ब्रा और पैटी उतार कर नग्न हो कर उससे चिपट गई।

वासना में लिप्त सेंथिल ने भी बिना कोई समय व्यर्थ किये मुझसे चिपट गया और मेरे होंठों को चूसते हुए एक हाथ से मेरे एक स्तन को मसलने लगा तथा दूसरे हाथ की उंगली से उम्ह... अहह... हय... याह... मेरे भगनासा को सहलाने लगा।

मैंने भी उसके चुम्बन का उत्तर चुम्बन से दे कर उसके लिंग को हाथ में पकड़ कर हिलाने लगी।

कुछ ही देर तक यह क्रिया करते रहने से जब मेरी उत्तेजना अत्यधिक बढ़ने लगी तब मैंने सेंथिल को अपने से अलग कर के उसके सर तो पकड़ कर अपनी योनि की ओर धकेला।

क्योंकि सेंथिल भी अत्यधिक उत्तेजित हो चुका था इसलिए मेरे संकेत पाते ही वह पलटी हो कर 69 की स्थिति में हो गया और अपना मुंह मेरी योनि पर रख दिया।

मैं भी उसका साथ देने के लिए लपक कर उसके लिंग को अपने मुंह में ले कर चूसने लगी और उसके अंडकोष को अपने एक हाथ से सहलाने लगी।

दस मिनट की इस संयुक्त पूर्व-क्रिया के कारण जब दोनों की उत्तेजना चरम सीमा पर पहुँचने लगी तब मैं सेंथिल के लिंग को मुंह से निकाल कर पीठ के बल सीधा लेट गई और अपनी टांगें चौड़ी कर ली।

तब सेंथिल भी मेरी योनि से अलग होते हुए सीधा हो कर मेरी चौड़ी की हुई टांगों के बीच में बैठ गया और अपने लिंग से मेरे भगनासे पर रगड़ने लगा।



उसकी इस क्रिया से हम दोनों की उत्तेजना में बढ़ौतरी हुई और दोनों ही सिसकारियाँ भरने लगे ।

जब मुझसे और उत्तेजना बर्दाश्त नहीं हुआ तब मैंने हाथ बढ़ा कर सेंथिल के लिंग को पकड़ कर अपनी योनि के मुँह पर रख दिया ।

जब सेंथिल ने अपने तीर को बिल्कुल निशाने पर बैठे देखा तो उसने एक ही धक्के में अपने आधे लिंग को मेरी योनि में उतार दिया ।

क्योंकि सेंथिल का लिंग मेरे पति के लिंग से आधा इंच अधिक मोटा था इसलिए वह फंस कर मेरी योनि प्रवेश किया जिससे मुझे बहुत तेज़ रगड़ लगी और मेरे मुँह से उम्ह... अहह... हय... याह... उई माँ.... की सिसकारी निकल गई ।

मेरी सिसकारी सुन कर सेंथिल रुक गया और पूछा- दीदी, क्या बहुत दर्द हुआ है ? क्या मैं इस बाहर निकाल लूँ ?

मैंने अपने सिर को नकारात्मक हिलाते हुए कहा- नहीं, कोई दर्द नहीं हो रही है । तुम्हारा लिंग कुछ अधिक मोटा है इसलिए उसकी रगड़ लगने से मेरी योनि अंदर बहुत तीव्र खलबली की लहर उठने लगी थी । अब सब ठीक है, तुम इसे पूरा अंदर तक डाल कर संसर्ग को जारी रखो ।

मेरी बात सुन कर सेंथिल ने मेरे होंठों को चूमा और एक जोर का धक्का दे कर अपने पूरे लिंग को मेरी योनि में डाल दिया ।

एक बार फिर मेरे मुँह से सिसकारी निकली जिसे सेंथिल ने नज़रंदाज़ कर दिया और कमर हिला के अपने लिंग को मेरी योनि के अंदर बाहर करने लगा ।

अगले बीस मिनट तक वह इस क्रिया को पहले आहिस्ता आहिस्ता, फिर तेज़ी से और फिर बहुत तीव्रता से करता रहा । उस बीस मिनट में हम दोनों लगातार सिसकारिया भरते रहे



और हम दोनों के गुप्तांगों से पूर्व-रस का रिसाव होता रहा ।

बीस मिनट के अंत में मुझे महसूस हुआ कि मैं चरम सीमा पर पहुँचने वाली हूँ तब मैंने सेंथिल को और अधिक तीव्रता से धक्के लगाने को कहा ।

जैसे ही सेंथिल ने अधिक तीव्रता से धक्के लगाने शुरू किये तब उत्तेजना की वृद्धि के कारण उसके लिंग भी फूल गया जिससे मुझे अत्याधिक तीव्र रगड़ लगने लगी ।

मेरी योनि में हो रही सिकुड़न और सेंथिल के लिंग में हो रही फुलावट से मैं समझ गई कि हम दोनों ही कामोन्माद के शिखर पर पहुँचने वाले थे ।

उस क्षण के सुखद उन्माद का अनुभव करने के लिए मैं नीचे से उचक उचक कर सेंथिल के हर तीव्र धक्के का उत्तर देने लगी ।

लगभग सात आठ धक्कों के बाद सेंथिल ने एक लम्बी हुंकार भर कर अपने लिंग-रस की पिचकारी मेरी योनि में ही विसर्जित करने लगा ।

उसी क्षण मेरे मुँह से भी एक लम्बी सिसकारी निकली और मेरा शरीर अकड़ गया तथा मेरी योनी ने सिकुड़ कर सेंथिल के लिंग को जकड़ते हुए योनि-रस विसर्जित किया ।

पांच मिनट तक मेरी योनि सेंथिल के लिंग को निचोड़ कर उसका पूरा लिंग-रस अपने अंदर खींचती रही और फिर उसके ढीले ढाले खाली लिंग को बाहर निकाल दिया ।

उस संसर्ग क्रिया के कारण दोनों की सांसें फूल गई थी, शरीर पसीने से भीग गये थे इसलिए थकावट के मारे निढाल हो कर हम वहीं लेटे रहे ।

मैं वहाँ लेट कर मन ही मन अपनी पहली सफलता पर मुस्कुरा रही थी और मुझे पूर्ण विश्वास हो गया था की अब सेंथिल मेरी बेटी वैजन्ती के साथ विवाह के लिए सहमत हो जाएगा ।



दस मिनट के बाद जब अपने को सामान्य समझा तब मैं उठ कर बाथरूम में जा कर अपनी योनि को अच्छी तरह से साफ़ किया और नाइटी पहन कर अपने काम में व्यस्त हो गई।

कुछ देर के बाद सेंथिल मेरे पास आया और मेर पाऊँ पकड कर मुझसे माफ़ी मांगते हुए कहा- दीदी, मुझे माफ़ कर दीजिये। मैंने आपके साथ बहुत ही बड़ा पाप कर दिया है इसके लिए मैं बहुत शर्मिंदा हूँ। मुझे यह कभी भी नहीं करना चाहिए था लेकिन वासना के वशीभूत हो कर मैंने अनर्थ कर दिया है।'

मैंने अपने पांव छुडाते हुए उत्तर में कहा- नहीं सेंथिल, तुम्हें दुखी होने की कोई आवश्यकता नहीं है। उस कार्य में हम दोनों ही बराबर की हिस्सेदार थे। जितना तुम वासना के वशीभूत थे उतना ही मैं भी थी। मैं तुमसे बड़ी हूँ इसलिए उस समय तुम्हें रोकने की ज़िम्मेदारी मेरी थी लेकिन मैंने तुम्हारा साथ दे कर उतना ही घोर अपराध किया है।

मेरी बात सुन कर उसने कहा- दीदी, मैं आप की बात से सहमत नहीं हूँ क्योंकि मैंने अपराध किया है, इसलिए आप मुझे दंड दीजिये। आप जो भी दंड देंगी मैं उसे भुगतने के लिए तैयार हूँ।

सेंथिल की बात सुन कर मैं बोली- ठीक है, लेकिन मुझे तो दंड के बारे में सोचने के लिए कुछ समय चाहिए होगा। अगर तुम दंड भुगतने के लिए बहुत उत्सुक हो तो खुद ही बता दो कि तुम्हें क्या दंड चाहिए।

तब वह बोला- दीदी, आप समय अवश्य ले लो लेकिन मुझे बहुत सख्त दंड देना जो मुझे जीवन भर याद रहे।

मैंने उसकी बात के उत्तर में मैंने सिर्फ 'ठीक है' कह दिया जिसे सुन कर वह मुंह लटका कर घर से बाहर चला गया और मैं अपने काम में व्यस्त हो गई।



रात का खाना खाकर जब सेंथिल अपने कमरे में सोने चला गया तब मैंने रसोई का काम समाप्त करके अपने कमरे में लेटी आगे की कार्यवाही के बारे में सोच रही थी तभी मेरे मस्तिष्क में एक युक्ति समझ में आई।

पूर्ण सफलता प्राप्त करने के उद्देश्य से मैं उस युक्ति को कार्यान्वित करने के लिए तुरंत उठ कर सेंथिल के कमरे पहुंची तो उसे सिर्फ लुंगी पहने कर ही सोते देखा।

क्योंकि उस रात गर्मी बहुत थी शायद इसीलिए सेंथिल ऐसे सो रहा था तब मैंने भी झट से अपने सभी कपड़े उतार कर सिर्फ पैटी पहन कर उसके साथ ही बिस्तर में लेट गई।

सेंथिल के साथ लेटते ही उसकी नींद खुल गई और उसने मेरी ओर देखा तो उठ कर बैठते हुए कहा- दीदी आप, यहाँ क्या कर रही हैं ?

मैंने उत्तर में कहा- कुछ नहीं, सिर्फ तुम्हारे साथ कुछ बातें करनी थी इसलिए आई हूँ।

सेंथिल सरक मुझसे थोड़ा अलग हो कर बैठते हुए बोला- हाँ बताइये क्या बात है ?

मैंने देखा वह मेरे उरोजों को बहुत ही ललचाई नज़र से देख रहा था तब मैंने कहा- क्या देख रहे हो ?

उसने कहा- कुछ नहीं दीदी।

मैं ऊँचे स्वर में बोली- झूट मत बोलो। क्या तुम मेरे स्तनों को नहीं देख रहे थे ?

वह थोड़ा संकोच से बोला- हाँ दीदी, इन्हें ही देख रहा था। यह बहुत ही सुन्दर और आकर्षक लग रहे हैं। कोमल त्वचा के हैं लेकिन काफी उठे हुए और सख्त हैं। इन्हें देख कर कोई भी नहीं कह सकता की आप एक सतरह वर्ष की युवती की माँ भी हो।

तब मैं उठ कर बिल्कुल उसके निकट बैठ गई और अपने दोनों स्तनों को उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा- अगर तुम्हें बहुत अच्छे लगते हैं तो फिर इनको सिर्फ देख ही क्यों रहे हो। तुम



इन्हें पकड़ कर मसल और चूस भी सकते हो।

मेरी बात के उत्तर में उसने कहा- नहीं दीदी, एक बार पाप हो गया अब दोबारा वही पाप नहीं करूँगा। आप ने अपने कपड़े क्यों उतार रखे हैं ?

मैंने कहा- रसोई से काम करके आई थी और बहुत गर्मी लग रही थी इसलिए कपड़े उतार कर पसीना सुखा रही थी। तुमने भी तो सिर्फ लुंगी के इलावा कुछ भी नहीं पहना हुआ है।

इससे पहले की सेंथिल आगे कुछ कहता मैं उससे चिपट गई और उसके मुँह को पकड़ कर अपने स्तनों पर दबा कर बोली- लो अब अधिक मत तरसो और इन्हें चूस कर अपनी प्यास बुझा लो। यह मेरा आदेश है और तुमने उसे मानने के लिए मुझे आश्वासन दे रखा है।

मेरी बात सुन कर वह कुछ देर झिझका और फिर उसने मेरी एक तरफ की चुचुक को अपने मुँह में ले कर चूसा तथा थोड़ी देर के बाद दूसरी चुचुक को चूसने लगा।

मेरी चुचुकों को चूसने के कारण जब मेरे शरीर के अन्दर वासना भड़कने लगी, तब मैंने उसके सिर के पीछे हाथ फेरते हुए उसे अपने स्तन के ऊपर दबा दिया।

इससे पहले कि वह कुछ बोले, मैंने अपना दूसरा हाथ बढ़ा कर उसकी लुंगी खोल दी और उसके लिंग को पकड़ कर मसलने लगी।

वह कुछ कहने के लिए छटपटाया लेकिन कह नहीं सका क्योंकि उसके मुँह में मेरे स्तन की चुचुक थी और मैंने उसके सिर को अपने स्तन से चिपका रखा था।

कुछ देर का बाद जब सेंथिल का लिंग तन गया तब मैंने उस तेज़ी से हिलाने लगी जिससे उसकी उत्तेजना बढ़ने लगी।

जब अधिक वासना के कारण उसने अपने पर नियंत्रण खो दिया तब उसने अपने एक हाथ



को मेरी पैटी में डाल कर मेरी भगनासे को कुरेदने लगा ।

उसकी की इस क्रिया के कारण जब मेरी उत्तेजना भी बढ़ गई तब मैंने सेंथिल को छोड़ दिया और पलटी हो कर उसके लिंग को अपने मुंह में डाल कर चूसने लगी ।

सेंथिल ने भी वासना के वशीभूत हो कर मेरे स्तनों से अलग हो गया और मेरी पैटी उतार कर मेरी योनि पर आक्रमण कर दिया ।

उसने पहले तो जीभ से मेरे भगनासे को सहलाया और फिर उसे मेरी योनि में घुसा कर अन्दर बाहर करने लगा ।

पांच मिनट के बाद जब मेरी योनि में से रस का विसर्जन हुआ तब उसने चटकारे लेते हुए वह सब चाट लिया ।

इसके बाद अगले दस मिनट तक सेंथिल फिर मेरी योनि को चूसता-चाटता रहा और मैं उसके लिंग को लगातार चूसती रही ।

जब मुझे महसूस हुआ की सेंथिल का लिंग-मुंड कुछ फूलने लगा था तब मैं उससे अलग हो कर उसे नीचे लेटने के लिए कहा ।

उसके नीचे लेटते ही मैं उसके ऊपर चढ़ गई और उसके लिंग को अपनी योनि की सीध में कर के उसके ऊपर धीरे धीरे बैठने लगी ।

क्योंकि उत्तेजना के कारण मेरी योनि बहुत सिकुड़ी हुई थी और सेंथिल का लिंग-मुंड फूला हुआ था इसलिए उसके लिंग को मेरी योनि के अंदर जाने में कुछ समय लगा ।

सेंथिल का लिंग ऐसे फंस के जा रहा था जैसे की किसी कुंवारी युवती की योनि में पहली बार जा रहा हो ।

मेरी कसी हुई योनि में सेंथिल का लिंग जब फंस कर घुस रहा था तब मेरे शरीर के कई



अंगों में उत्तेजना की एक अजीब सी लहरें उठने लगी थी।
योनि में पूरा लिंग घुसने पर मुझे कुछ क्षणों के लिए रुकना पड़ा क्योंकि उत्तेजना की वह तरंगें बहुत तेज़ हो गई थी और मेरी टांगें अकड़ने लगी थी।

कुछ ही क्षणों में जैसे ही मेरे शरीर में वह तरंगें कम हो कर रुकीं और टाँगे सामान्य हुईं तब मैंने उछल उछल कर सेंथिल के लिंग को अपनी योनि के अन्दर बाहर करने लगी।

सेंथिल के फूले हुए लिंग-मुंड के कारण मेरी सिकुड़ी हुई योनि में बहुत रगड़ लग रही थी और देखते ही देखते मेरा योनि-रस का झरना बहने लगा।

अगले दस मिनट योनि-रस से गीली योनि में से फक फक की ध्वनि कमरे में गूँजती रही और हम दोनों उसमें लीन हो कर कामोआनंद के चर्म-शिखर की ओर अग्रसर होने लगे।

जब उछलते उछलते मुझे थकावट होने लगी तब मैं नीचे लेट गई और सेंथिल को ऊपर चढ़ कर संसर्ग को जारी रखने के लिए कहा।

सेंथिल ऊपर चढ़ कर बहुत तेज़ी से अपने लिंग को मेरी योनि के अन्दर बाहर करने लगा और लगभग पन्द्रह मिनट में ही उसने बहुत ही ऊँचे स्वर में चिंघाड़ मारते हुए मेरी योनि को अपने गर्म गर्म वीर्य रस से भर दिया।

तीव्र संसर्ग से हुई थकावट के कारण सेंथिल मेर ऊपर ही लुड़क गया और मैं उसे अपने बाहुपाश में ले लिया।

लेटे लेटे हम दोनों को नींद आ गई और दो घंटे के बाद जब मैं जागी तो पाया की सेंथिल का लिंग अभी भी मेरी योनि के अन्दर ही था।

जैसे ही मैंने सेंथिल के लिंग को अपनी योनि से बाहर निकला तभी उसमें से हम दोनों के रसों का मिश्रण बाहर निकल कर चादर पर फैलने लगा।



मैंने तुरंत सेंथिल को अपने ऊपर से हटा कर अपनी योनि के मुंह पर हाथ रखा और उसे साफ़ करने के लिए बाथरूम को ओर भागी।

सेंथिल भी जाग कर मेरे पीछे पीछे बाथरूम में आ गया तब मैंने उसके लिंग को भी साफ़ करा और हम दोनों बिस्तर की चादर बदल कर एक दूसरे को लिपट कर सो गए।

सुबह सेंथिल द्वारा मेरे स्तनों एवम् चूचुकों को मसलने के कारण जब मेरी नींद खुली तो देखा कि वह मुझे जगाने का प्रयत्न कर रहा था।

उठने पर मैंने देखा की वह मुझसे पहले जाग चुका था और मेरी बगल में नग्न ही बैठा था तथा उसके हाथ में हम दोनों के लिए चाय की प्यालियाँ थी जो वह बना कर लाया था।

चाय पीते समय सेंथिल ने मुझसे पूछा- दीदी, रात को एक बार फिर से वासना के चुंगल में फंस कर आपके साथ दुष्कर्म करने के लिए क्षमा माँगता हूँ और याचना करता हूँ कि आप मुझे कठोर से कठोर दंड दे। मुझे आशा है की अब तक तो आपने मेरे लिए कोई उपुक्त दंड सोच लिया होगा।

मैंने सेंथिल के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा- सेंथिल, रात को तो तुमने कोई गलती नहीं करी है। तुम तो मुझसे अलग होना चाहते थे लेकिन मैंने ही तुम्हें नहीं होने दिया। तुम्हें मेरे साथ संसर्ग करने के लिए मैंने ही तुम्हें बाध्य किया था। इस बार के दुष्कर्म करने के लिए मैं ही दोषी हूँ इसलिए तुम्हें मुझे दंड देना चाहिए।

मेरी बात सुन कर सेंथिल बोला- दीदी, ऐसा मत नहीं कहो, आप दोषी कैसे हो सकती हैं? मैंने उत्तर दिया- तुम तो अपने कमरे में आ कर सो गए थे। मैंने ही तुम्हारे कमरे ने नग्न आ कर तुम्हारी निद्रा में खलल डाला। मैंने कुछ ऐसी क्रिया कर के तुम्हें यह सब करने का आदेश दिया था और तुमने छोटे भाई की तरह मेरे आदेश का पालन किया था।



इससे पहले वह कुछ बोले मैंने कहा- सेंथिल, एक प्रकार से हम दोनों ही दोषी हैं और दोनों को ही दंड मिलना चाहिए। ऐसा करते हैं कि शाम के पांच बजे तक तुम मेरे लिए कोई कठोर दंड सोचो और मैं तुम्हारे लिए सोचती हूँ।

मेरी बात सुन कर सेंथिल बोला- ठीक है दीदी, शाम की चाय के समय हम दोनों एक दूसरे को दंड देंगे।

इसके बाद मैं घर के काम में व्यस्त हो गई और सेंथिल नहा धो कर कुछ देर के लिए अपने एक दोस्त के घर चला गया और दोपहर के खाने के समय ही वापिस आया।

उसके आने पर हम दोनों ने खाना खाया और उसके बाद अपने अपने कमरे में विश्राम करने के लिए चले गए।

शाम पांच बजे मैंने जब चाय बना कर सेंथिल को बुलाया तब वह मेरे कमरे में आ कर मेरे पास खड़ा हो गया।

मैंने उसके परेशान चेहरे को देख कर उसकी बाजू पकड़ कर अपने पास बिठाते हुए पूछा- क्या हुआ, कुछ परेशान से दिख रहे हो, क्या कुछ चाहिए?

मेरे पास बैठते हुए सेंथिल बोला- दीदी, मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा कि आप को क्या दंड दूँ। क्या आप इसमें मेरी कोई सहायता कर सकती हैं?

मैंने उसकी ओर देखते हुए बोली- सेंथिल, मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकती हूँ? मैं तो पहले से ही परेशान हूँ कि जो तुम्हारे लिए दंड सोचा है वह तुम्हें कैसे बताऊँ।

सेंथिल ने चाय का कप मेज़ पर रखते हुए बोला- दीदी, परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। आप निश्चिन्त हो कर बताओ की आप मुझे क्या दंड दे रही हो।

मैंने चाय पीते हुए सेंथिल से कहा- मैं चाहती हूँ कि तुम वैजन्ती से शादी कर लो। क्या



तुम्हें मेरा यह दंड स्वीकार है ?

सेंथिल ने उत्तर दिया- दीदी, मेरे द्वारा आपके साथ किये गए कुकर्म के लिए तो यह बहुत ही कम है। कुछ अधिक कठोर दंड होना चाहिए था।

उसकी बात सुन कर मैंने कहा- सेंथिल, मैं तुम्हें इससे अधिक कठोर दंड नहीं दे सकती। लेकिन मुझे तुमसे एक वचन चाहती हूँ कि हमारे बीच हुए इस सहवास के बारे में तुम किसी को भी नहीं बताओगे। यहाँ तक की शादी के बाद वैजन्ती को भी नहीं बताओगे।

मेरी बात सुन कर सेंथिल बोला- दीदी क्या आप मुझे मूर्ख समझती है जो आपके और अपने घर में आग लगाऊंगा। आप निश्चिन्त रहिये, मैं माँ की और आप की कसम खाता हूँ कि मरने दम तक यह बात मेरी जुबां पर नहीं आएगी।

उसकी बात सुन कर मैंने उसे अपने गले से लगाया तब वह बोला- दीदी, आप भी मुझे एक वचन दीजिये की किसी भी स्थिति में आप मुझे अपने साथ कभी भी संसर्ग नहीं करने देंगी और ना ही कभी प्रेरित करेंगी।

मैंने उत्तर में कहा- तुम्हारे इस अनुरोध को मैं दंड समझ कर स्वीकार करती हूँ और वचन देती हूँ कि भविष्य में तुम्हें किसी भी प्रकार के अनैतिक सम्बन्ध के लिए ना तो उत्तेजित करूँगी तथा ना ही कभी प्रेरित करूँगी।

इसके बाद मैंने सेंथिल से कहा- मैं आशा करती हूँ कि हमारे परिवार में तुम्हारी शादी के बाद इस रुढ़िवादी प्रथा के अनुसार आगे और कोई शादी नहीं होगी। मैं चाहूँगी कि इस प्रथा को समाप्त करने के लिए वैजन्ती और तुम अवश्य आवाज़ उठाओगे ताकि भविष्य में किसी भी नारी को ऐसी अनैतिक युक्ति का प्रयोग नहीं करना पड़े।

मेरी बात सुन कर सेंथिल बोला- दीदी, मैं आप की बात से पूर्ण सहमत हूँ और मैं आपको



आश्वासन देता हूँ की इस प्रथा के विरुद्ध मैं अवश्य आवाज़ उठाऊंगा।

हमारी बात समाप्त होते ही सेंथिल उठ कर बाहर अपने दोस्तों के साथ घूमने चला गया और मैं रसोई में रात के लिए खाना बनाने लगी।

लगभग एक घंटा ही बीता था। तभी बाहर के दरवाज़े की घंटी बजी और मैंने खोला तो मम्मी, पापा और वैजन्ती को खड़े पाया।

रात को खाने के बाद जब मैंने मम्मी पापा को बताया की सेंथिल वैजन्ती से शादी करने के लिए राज़ी हो गया है तब दोनों के चेहरों पर खुशी की लहर दौड़ गई।

रात को जब मेरे पति का फ़ोन आया तब उनको भी यह शुभ समाचार सुनाया तो वे भी बहुत खुश हुए।

दो दिनों के बाद मेरे पति और मेरी सास आये और रीती रिवाज़ के अनुसार वैजन्ती और सेंथिल की सगाई कर दी।

सगाई के तीन वर्ष बाद वैजन्ती और सेंथिल की शादी हो गई और अब वह हनीमून के लिए सिंगापुर गए हुए हैं।

रचना के अंत में मेरे जीवन में आई उस विकट स्थिति को एक उद्देश्यपूर्ण रचना के रूप में लिख कर आप के सन्मुख प्रस्तुत के लिए मैं श्रीमती तृष्णा लूथरा जी का बहुत आभार प्रकट करती हूँ।

मैं उनका बहुत धन्यवाद भी करती हूँ कि उन्होंने इस उद्देश्यपूर्ण रचना द्वारा एक रुढ़िवादी प्रथा को उजागर किया है जिसका समाप्त होना अनिवार्य है।

मुझे आशा है कि इस रचना को पढ़ने के बाद आप सब भी इस रुढ़िवादी प्रथा की समाप्ति



के लिए अवश्य अपनी आवाज़ उठाएंगे।

इस रचना को पढ़ने वाली पाठिकाओं एवं पाठकों से निवेदन है कि आप केवल अपने विचार ही मेरे ई-मेल आई डी

tpl@mail.com या trishnaluthra@gmail.com पर भेजें।

आप को सूचित किया जाता है कि व्यर्थ के असभ्य संदेशों एवं दोस्ती के निमंत्रण का उत्तर नहीं दिया जाएगा।

आपकी सदा आभारी,

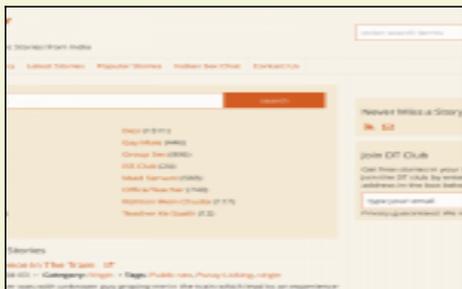
तृष्णा लूथरा (टी पी एल)





Other sites in IPE

Desi Tales



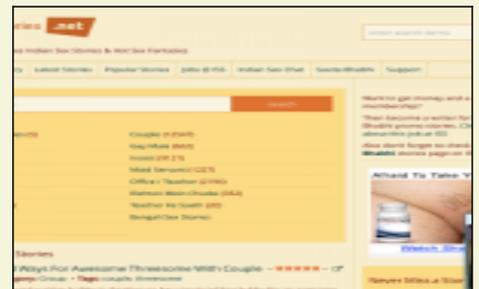
Indian Sex Stories, Erotic Stories from India.

Savita Bhabhi Movie



Savita Bhabhi Movie is India's first ever animated movie. It takes us on a journey thru time, a lot of super hot sex scenes and Savita Bhabhi's mission to bring down a corrupt minister planning to put internet censorship on the people.

Indian Sex Stories



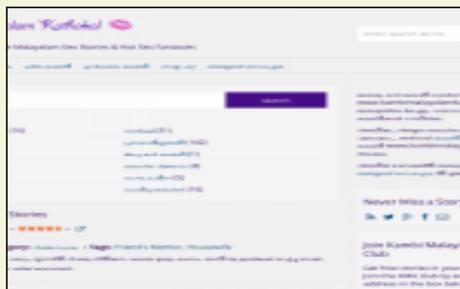
The biggest Indian sex story site with more than 40 000 user submitted sex stories. Go and check it out. We have a story for everyone.

Indian Gay Site



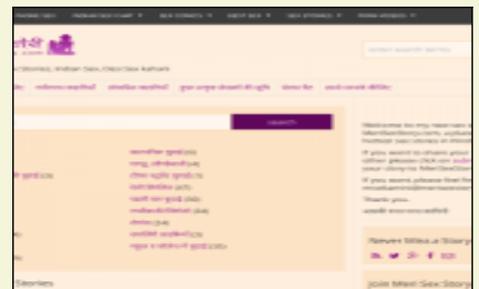
#1 Gay Sex and Bisexual Site for Indians.

Kambi Malayalam Kathakal



Large Collection Of Free Malayalam Sex Stories & Hot Sex Fantasies.

Meri Sex Story



मैं हूँ मस्त कामिनी... मस्त मस्त कामिनी... मेरी सेक्स स्टोरी डॉट कॉम अत्यधिक तीव्र गति से लोकप्रिय होती जा रही है, मेरी सेक्स स्टोरी साईट उत्तेजक तथा रोमांचक कहानियों का खजाना है...